परिशिष्ट

टिप्पणियाँ

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

प्रेम-माधुरी

यथारथ = वास्तव में। **नसै** = नष्ट होता है। **नाहक** = व्यर्थ। **बिथा** = कष्ट। **जौ कहैं जाहु न तौ प्रभुता** = नायिका का कथन है कि मैं यह कहूँ कि मत जाओ, तो इसमें मेरा तुम्हारे ऊपर प्रभुत्व सिद्ध होगा जो अनुचित है। **पतिआइए** = विश्वास होगा। **पयान समै** = चलने के समय। **उराहनो** = उलाहना।

यमुना-छवि

तरनि तनूजा = सूर्य की पुत्री, यमुना। **मुकुर** = दर्पण। **राका निसि** = पूर्णिमा की रात। **परसन हित** = छूने के लिए। **आभा** = चमक। **दुरि** = छिपकर। **लहत** = प्राप्त करते हैं। **प्रनवत** = प्रणाम। **आतप वारन** = धूप रोकना। **नै रहे** = झुके रहे। **मथि** = बीच में। **लोल** = चंचल। **लहि** = लेते हुए। **दुरि** = छिपना। **हिडोरनि** = हिंडोलों पर। **किलौलें** = खेलना। **बालगुड़ी** = छोटी पतंग। **सत** = सौ। **पवन-गवन बस** = हवा चलने से। **अवगाहन** = जल में डुबकी लगाना। **जुग पक्ष** = दो पक्ष (कृष्ण और शुक्ल)। **लुकत** = छिपना। **कालिन्दी** = यमुना। **रजत** = चाँदी। **चकई** = कुम्हार का चाक, बच्चों का खिलौना। **मल्ल** = पहलवान। **बक** = बगुला। **पिक** = कोयल।

जगन्नाथदास 'रत्नाकर'

उद्धव-प्रसंग

1. **मनभावन** = मन को परम प्रिय श्रीकृष्ण। **झौरि-झौरि** = समूह का समूह। **पौरि** = द्वार। **उझकि-उझकि** = ऊँचे उठ उठ कर। **पेखि-पेखि** = देख-देख कर। **छोहनि** = प्रेम से। **छबै** = छविमान।

2. **स्वबस** = अपने अधीन। **सँजोग** = मिलन। **बिलस्यौ** = आनन्दित, लीन। **हिय-कंज** = हृदय कमल (योगी ब्रह्म को हृदय-कमल में जलती हुई ज्योति के रूप में देखता है)। **जड़-चेतन-बिलास** = प्रकृति और ब्रह्म की क्रीड़ा का आनन्द। **छोहि** = प्रेम में क्षुब्ध होकर।

3. **अकह** = अकथनीय। **थहरानी** = काँप गयी। **थानहि** = अपने स्थान पर ही। **थिरानी** = निश्चेष्ट होकर स्थिर हो गयी। **रिसानी** = क्रुद्ध हुई। **बिथकानी** = चकित, शिथिल। **सेद** = पसीना। **मुरझानी** = मूर्च्छित। **सहमि** = डरकर।

4. **कैधों** = अथवा। **अनारी** = अनाड़ी, अज्ञानी। **अन्यारी** = एकता, अभेदत्व। **बारिधिता** = समुद्र का अपना स्वरूप, विशालता। **बिलैहै** = विलीन या नष्ट हो जायगी।

5. **चिन्तामनि** = समस्त कामनाओं को पूर्ण करनेवाली एक मणि-विशेष। **पँवारि** = फेंककर। **मुकुर** = शीशा, दर्पण। **सारन** = बुझाना। **त्रिकुटी** = दोनों भौंहों के मध्य नासिका के ऊपर का भाग।

6. **बतरावौ** = कहौ। **दरिबै कौ** = दलने या नष्ट करने के लिए। **बैन-पाहन** = वचनरूपी पत्थर।

7. **विवेक** = बुद्धि, ज्ञान। **रावरी** = आपकी। **छमा** = क्षमा। **छमता** = क्षमता, शक्ति। **ताजन** = दण्ड, त्रास। **बिचारी** = दीन, दुःखी। **परिचारिका** = सेविका।

8. **आरति** = क्लेश, दुःख। **साँसुरी** = साँसे। **मयूर-पच्छ** = मोर पंख। **गुंज-अंजली** = घुँघुचियों से भरी अँजुली। **उमाहै** = उमड़ा हुआ। **सजाव** = अच्छा जमा हुआ। **मही** = मट्ठा। **दलकति पाँसुरी** = धड़कती हुई छाती। **कीरति कुमारी** = कीर्ति की पुत्री राधा।

9. **छाके** = छककर पिये हुए। **थाके** = थकित। **चकात** = चकित भाव से। **सुधियात** = स्मरण करते। **सारत** = पोंछता है। **बहोलिनि** = कुर्ते की बाँहों से।

10. **रज** = धूल। **धाइ** = दौड़कर। **माते** = मत्त, मतवाले। **हेरि** = देखकर। **थरकति** = काँपती हुई। **थहरि** = काँपकर। **थिराए** = स्थिर करना। **सद्य** = ताजा। **छलकनि** = उमड़न। **चाहि** = अभिलाषापूर्वक। **पुहुमी** = पृथ्वी। **कोंछि** = गोद।

11. **छावते** = छा लेते, बना लेते। **रम्य** = सुन्दर। **रौन-रेती** = रमणीय रेतीली भूमि। **बिहाइ** = छोड़कर। **स्रौन रसना** = कान और जिह्वा। **लेखि** = देखकर। **प्रलयागम** = प्रलय आ जाना। **चाव** = उमंग, इच्छा। **चितावन** = सावधान करना या सजग करना।

गंगावतरण

1. **उमड़ि** = उमड़कर। **खंडति** = खंडित करती हुई। **विखंडति** = विखंडित करती हुई, चीरती हुई। **तरजे** = भयभीत हुए। **महामेघ** = प्रलय के बादल।

2. **दरेर** = धक्का, रगड़। **धुधकारि** = घोर शब्द करती हुई। **कावा** = चक्कर।

3. **स्वाति-घटा** = स्वाति नक्षत्र के बादलों का समूह। **मुक्ति-पानिप** = मोती की कान्ति। **रूरी** = सुन्दर। **जल-व्यालनि** = जल में रहनेवाले सर्प। **चल** = चंचल। **चपला** = बिजली।

4. **बितान** = मंडप, तम्बू। **विस्तर** = विस्तृत। **सुर बनितानि** = देवताओं की स्त्रियाँ। **वृंद** = समूह।

5. **जोजन** = योजन, चार कोस की नाप। **उसावत** = हवा में उड़ाकर भूसे से अन्न अलग करता है।

6. **सुरपुर** = स्वर्ग। **निसैनी** = सीढ़ी। **ओजनि** = तेज से।

7. **आनहि के** = अन्य के। **चोप** = उमंग। **चिकनाई** = प्रेम का चिकनापन, प्रेम माधुरी।

8. **सुजान** = चतुर। **बाम** = पत्नी, नारी। **ऐंचति** = सिकोड़ती हुई।

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

वातायनों = झरोखों। **मुह्यमाना** = मोहित। **क्लान्त** = दुःखी, थका हुआ। **तप्तभूतांगना** = गर्मी से सतायी स्त्री। **अर्क** = सूर्य। **कलभकर** = हाथी की सूँड़। **अंभोज-नेत्रा** = कमल जैसे नयनोंवाली। **नीप** = कदम्ब। **प्रोषिता** = प्रोषितपतिका नायिका अर्थात् विरहिणी। **प्रखर** = तेज। **चपल** = चंचल।

मैथिलीशरण गुप्त

कैकेयी का अनुताप

नीले वितान = नीला आकाश। **कुहकिनी** = कोमल, जादूगरनी।

निरख सखी.....यह उर्मिला का विरह गीत है, खंजन के आगमन से शरदागम की व्यंजना है। शरद के आतप में प्रियतम के तन की कान्ति आदि के दर्शन उर्मिला को प्रियतम मिलन का आनन्द दे रहे हैं। यह भावात्मक एवं काल्पनिक मिलन विरह-व्यथा का उद्दीपन बन जाता है।

खंजन = पक्षी विशेष, नेत्र के उपमान, शरद के सूचक।

फैला.....आतप—शरद की कोमल धूप में लक्ष्मण के शरीर की कान्ति देखना। प्रेम की ऊष्मता एवं लक्ष्मण के गौर वर्ण की व्यंजना।

मन से.....सर साये—मन के प्रेम तरंगों से पूर्ण होने की व्यंजना।

हँस—उल्लास का प्रतीक।

फूल उठे हैं कमल = हृदय-कमल का खिलना।

शिशिर न फिर गिरि वन में.....इस गीत में उर्मिला शिशिर के कष्टदायक प्रभाव से प्रियतम को मुक्त रखने की आकांक्षा से अनुप्राणित होकर अपने शरीर से उसकी सब आवश्यकताओं की पूर्ति का आश्वासन दे रही है।

जयशंकर प्रसाद

गीत

बीती विभावरी = यह गीत लहर से लिया गया है। प्रातःकाल की रमणीय सुषमा का सजीव चित्र प्रस्तुत करने वाला यह जागरण गीत है, इसमें उद्‌बोधन की ध्वनि है।

विभावरी = रात। **अंबर पनघट**—रूपक, **तारा घट**—रूपक, **ऊषा नगरी**—रूपक। **नवल रस** = जीवन के असीम उल्लास की प्रेरणा। **मलयज** = सुगन्धित पवन। **विहाग** = आधी रात के बाद गायी जानेवाली रागिनी, खुमारी।

श्रद्धा-मनु

कौन तुम.....अभिषेक—साँगरूपक।

मधुर.....आलस्य—इन पंक्तियों में मूर्त पर अमूर्त का आरोप है, अतः उपचार-वक्रता है। कविता में विशेष भाव-सौन्दर्य लाने के लिए कवि मूर्त को अमूर्त बना देता है।

प्रथम कवि.....सुन्दर छन्द = वाल्मीकि का श्लोक.....मा निषाद प्रतिष्ठां.....की ओर संकेत। आदिकवि तमसा नदी में स्नान करने जा रहे थे। मार्ग में उन्होंने क्रौंच पक्षी के जोड़े में से एक को व्याध के द्वारा मारा जाते हुए देखा। उनकी करुणा जाग उठी और उनका शोक सुन्दर श्लोक में परिणत हो गया।

कुसुम वैभव में लता समान—उपमा।

चन्द्रिका से लिपटा घनश्याम—रूपक।

खिला हो.....गुलाबी रंग—उत्प्रेक्षा से गर्भित रूपक।

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

अम्बर = आकाश। **रोर** = तीव्र शब्द। **निर्झर** = झरना। **ताड़ित** = विद्युत, बिजली। **आनन** = मुख। **भैरव** = भयंकर। **छोर** = किनारा।

दिवसावसान = दिन का अन्त। **तिमिरांचल** = अंधकार का आँचल। **अभिषेक** = स्नान। **नीरवता** = शान्ति, सन्नाटा। **अनुराग** = प्रेम। **अव्यक्त** = अप्रकट। **व्योम मण्डल** = आकाश। **अमल** = निर्मल। **उत्ताल-तरंगाघात** = ऊँची-ऊँची लहरों के आघात। **क्षिति** = पृथ्वी। **अनल** = अग्नि। **अंक** = गोद, छाती। **कमनीय** = सुन्दर, कोमल।

सुमित्रानन्दन पन्त

नौका विहार

दुग्ध धवल = दूध जैसी सफेद। **तन्वंगी** = पतली। **रेशमी विभा** = रेशम की तरह चमकदार चाँदनी। **वर्तुल** = गोल। **सस्मित** = मुस्कराती हुई। **शुचि** = साफ, उज्ज्वल। **रजत पुलिन** = चाँदनी में चमकने के कारण रेतीले किनारे चाँदी जैसे लगते हैं। **प्रमन** = प्रशान्त मन। **विस्फारित** = उत्सुकता से फटे हुए। **तिर्यक्** = तिरछा। **अराल** = टेढ़ी। **उर्मिला** = लहरों से युक्त। **प्रतनु** = दुर्बल।

परिवर्तन

भूतियाँ = वैभव। **छविजाल** = सौन्दर्य का अपार विस्तार। **दुरित** = दुःख और कष्ट का जीवन। **कल्प** = विस्तृत कालावधि। **उडगन** = नक्षत्र। **फेनोच्छवसित** = फेनों से परिपूर्ण।

बापू के प्रति

अस्थिहीन = कठोरता से रहित। **पूर्ण इकाई जीवन की** = सब प्रकार से पूर्ण जीवन। **निःस्व** = स्वार्थ-रहित।

भस्मकाम = इच्छाओं को नष्ट कर दिया है जिसने, ऐसे गाँधीजी। **पूर्ण-काम** = कामनाएँ पूर्ण हो गयी हैं जिसकी। **तमिस्रतोम** = अन्धकार का समूह। **विकृतभूत** = विकारयुक्त, मरी हुई परम्पराएँ। **श्रम-प्रसूति** = श्रम के द्वारा उत्पन्न विचार। **परिणीत** = विचारों से युक्त। **विग्रहों** = झगड़ों। **स्पृह्लाद** = इच्छा और प्रफुल्लता। **नानृतं जयति सत्यं मा भै** = सत्य जीतता है असत्य नहीं, इसलिए डरो मत।

महादेवी वर्मा

उनींदी = नींद से भरी। **बाना** = वेश-भूषा। **व्योम** = आकाश। **आलोक** = उजाला, प्रकाश। **तिमिर** = अन्धकार। **क्रन्दन** = रुदन, वेदना। **मधुप** = भौंरा। **कारा** = बन्दीगृह। **सुधा** = अमृत। **उपधान** = तकिया, सहारा। **मानिनी** = रूठी हुई।

अमा = अमावस्या। **कज्जल अश्रु** = कालिमा भरे आँसू। **आर्द्र** = गीला। **संकल्प** = दृढ़ इच्छा। **उन्मद** = उन्मत्त, बेसुध। **संसृति** = संसार। **स्वर्णबेला** = उषा। **शतदल** = कमल।

नीर = जल। **स्पन्दन** = गतिशीलता। **निस्पन्द** = गतिहीनता। **आहत** = पीड़ित। **निर्झरिणी** = नदी।

रामधारीसिंह 'दिनकर'

पुरूरवा

उद्दाम = प्रबल, प्रचण्ड। **उत्ताल** = ऊँची लहरों वाला। **मर्त्य** = मरणशील, नश्वर। **तूर्य** = तुरही, दुंदुभी। **स्यन्दन** = रथ। **आयुध** = अस्त्र, वज्र।

उर्वशी

देह भाव = शरीर की स्थिति। **फेनांशुक** = फेनरूपी वस्त्र। **इतिवृत्तहीन** = कथा या इतिहास से रहित। **समुद्भूत** = निकली हुई, उत्पन्न। **अमृतवर्ति** = अमृत वर्तिका (बत्ती) सर्प के फन पर लगा टीका, जो बत्ती जैसा लगता है। **उद्धत** = प्रचण्ड। **अदम्य** = जिसका दमन न हो सके। **शरभ** = हाथी का बच्चा। **शार्दूल** = सिंह। **निर्विष** = विषरहित। **भ्रूस्मिति** = भौंहों की मुस्कान। **शलथ** = शिथिल। **शिंजिनी** = धनुष की डोर। **संस्रस्त** = ढीला। **कामना वह्नि** = कामनारूपी आग। **अनवरुद्ध** = बिना किसी रुकावट के। **अप्रतिहत** = बिना रुके हुए। **दुर्निवार** = जिसे रोकना कठिन हो। **पवनान्दोलित** = हवा के द्वारा उठी हुई। **नीहार-आवरण** = ओस के समूह से आवृत।

अभिनव मनुष्य

अवधार्य = धारण कर, स्वीकार कर। **शब्दगुण** = शब्द को ग्रहण करना ही जिसका गुण है। **दिक्काल** = दिशा और समय। **गुह्यतम** = अत्यन्त गुप्त, रहस्यमय। **सुपरीक्षिता** = भली प्रकार देखी-परखी हुई। **लघुहस्तामलक** = हाथ पर रखे हुए छोटे आँवले जैसी।

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

मैंने आहुति बनकर देखा

दुर्धर = कठिन। **मरु** = मरुस्थल, रेगिस्तान। **नंदन** = देवताओं का उद्यान। **पात्र** = योग्य। **प्रशस्त** = श्रेष्ठ, उत्तम, बड़ा। **जनपद** = नगर। **गतिरोधक** = गति में बाधक, रुकावट। **अवसाद** = विषाद। **सम्मोहन** = चेतना लुप्त करना। **हाला** = मदिरा। **विदग्ध** = विद्वान्, रसिक।

हिरोशिमा

क्षितिज = पृथ्वी आकाश का सम्मिलन स्थल। **काल** = मृत्यु। **प्रज्वलित** = जलते हुए, तप्त।

विविधा

मधु की एक बूँद

के लेखे = के लिए। **अविद्या** = अज्ञान। **कोल्हू** = चक्र। **जाया** = स्त्री। **जापा** = प्रसव। **रीते** = खाली। **योजन** = चारकोस का एक योजन होता है (एक कोस बराबर दो मील) **मीन** = मछली। **शशि** = चन्द्रमा। **रवि** = सूर्य। **शत** = सौ। **मिथ्या** = असत्य।

बूँद टपकी एक नभ से

अभ्र = बादल। **द्रुतछन्द** = तीव्रगति वाला छन्द। **झरोखा** = रोशनदान। **ध्वनि** = आवाज।

मुझे कदम-कदम पर

चौराहे = चार रास्तों का समूह। **तजुर्बे** = अनुभव। **पत्थर** = सामान्य व्यक्ति। **सुस्मित** = मुस्कान। **सदानीरा** = वर्ष भर जल से भरी रहनेवाली नदी। **हीरा** = मानव-मन और हृदय के प्रकाश का प्रतीक। **अधीरा** = छटपटाती हुई। **पग-पग पर** = कदम-कदम पर। **आधिक्य** = अधिकता।

चित्रमय धरती

कोसो = एक कोस दो मील के बराबर। **धूसर** = धूल से भरी अथवा मटमैली। **साँवर** = साँवली। **चरवाहों** = जानवरों को चरानेवाले। **पाँति** = पंक्ति। **झौरों** = झुण्डों। **अमरित** = अमृत। **उसाँस** = गन्ध। **सुधि** = याद। **मन्द** = धीमी।

साँझ के बादल

अनजान = अपरिचित। **मन्थर** = मन्द। **साँझी** = चित्रकारी। **सेन्दुर** = सिन्दूर। **प्रवाल** = मूँगे।